

DPN 6235

Title : दमनारोहण विधि DAMANAROHANA VIDHI

Run. No. 6926

Cat. No. 49

Micro. No.

Subject 1872 / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Microsporidia found in
new in post colostrum
portions.

Size in cms. 29×11

Folios 19

Lines (in a page) 9

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor श्री भवानीशङ्करशर्मा / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 831

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : आग्नि होम, सुतदा, अनेल होम या ^{एक} मेह या चित्र।

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Khanda meru, needed for Agrostoma,
Putacha is illustrated.

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री भैरवाय भैरवाहां समादाय गाथा कृपु समीप मे ॥

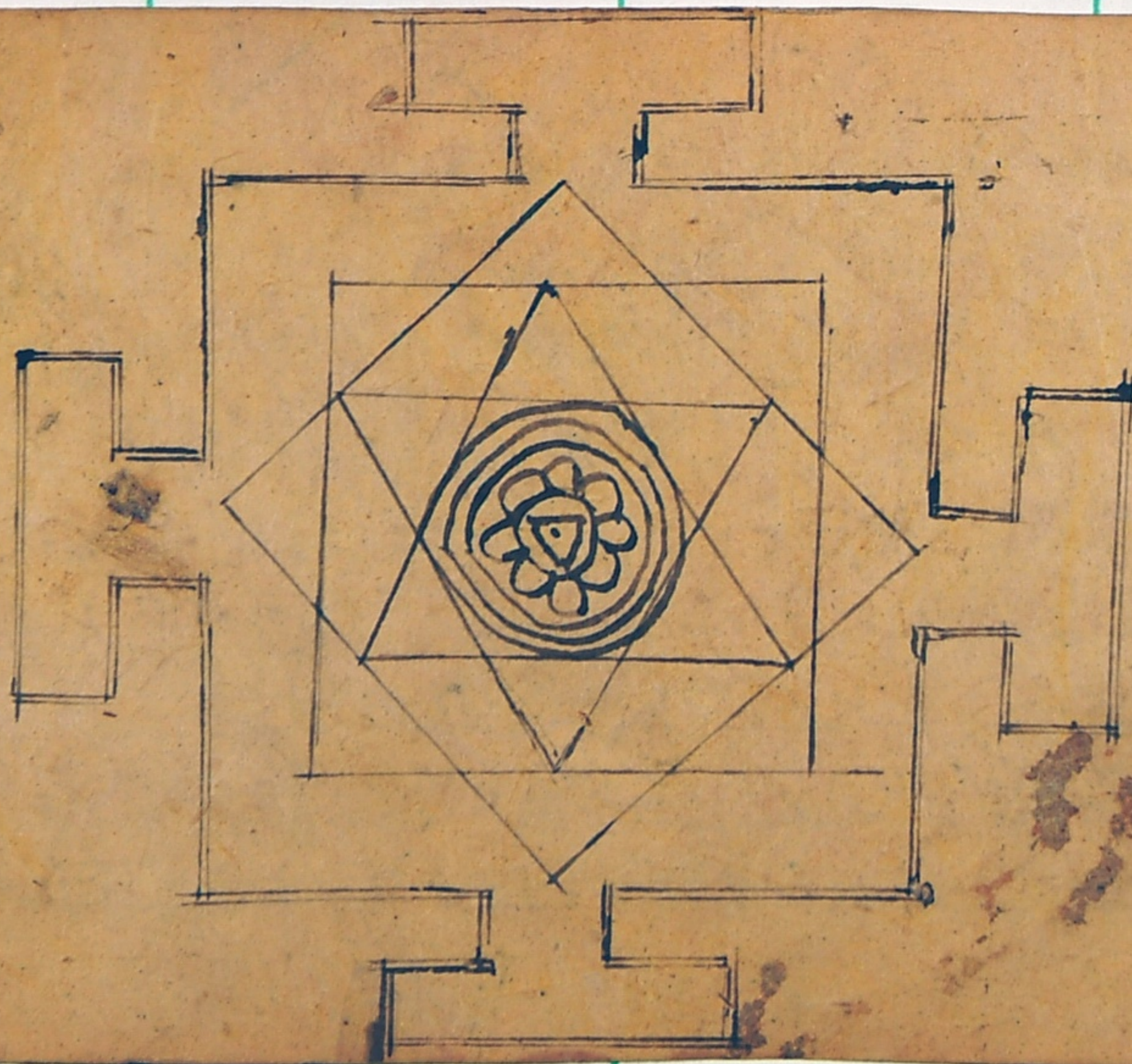
समाप्त वाक्य / Colophon - यद्वा विसर्जनिं ॥ इति मूलादि यद्वा विधिः समाप्तः ॥ ॥
इति द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

11 செவ்வாய் 11

लिपिकर धातु / Scribe's note —

१ विष्णुन सिला. रक्षा माय मात. ददावता एदि कायाव. सीता लक्ष्मी याडाया हुः। विष्णुन जुके, सिला.
ब्रह्मान सृष्टि माय मात उभय याडा हुः। ब्रह्मान जुके सिला ॥ महादेवम. कलकूट. यस नरे अनेक
देव स्थाडाव. संसार दमकाया हुः। महादेवन जुके सिला ॥ सूर्यम. सण अविड. तेज सह याडाव.
रक्ष सिलाव. गनन भोमाव. गनवन. अविड. हुः। सण (सब) जुके सिला ॥ पृथ्वी माता सदा.
पृथ्वी कुबुमाया हुः। पृथ्वी माता जुके सिला ॥ रामचन्द्रन. वनवासी भुमाव. समुद्र पडाव. तिस
स्थाडाव सीता गित हयाव हुः। रामचन्द्रन जुके सिला ॥ बनुमान. अवमहस कबा प्यत २
गुरकाव. हि २ दिमा. कबा उपा दमकाव. अमृत लंखन हायाव. सिला. लक्ष्मी याडाव हुः।
बनुमान जुके सिला ॥ ध्व ध्व. ध्व सीफुरी दमकाया हुः। अमृत स्वनिम्ह. वीतामा.
श्री गङ्गा हाडा. ध्वमा काय. श्री गौरी हाडा. जे. नेहा वा कायन जुके, सिला. पद सके
हम अलाव दगवड. महु. जेने मेव प्रमृणयावे. आला दगवड. महु. मलय
धातुव. ध्वन दा. पुन दा भुमीव. सीफुरी स को सोय. रवे मलयक कितकिओ हु
धाम. धनयाजिनिस ख. हा जगत जगति. हा जगत्मात. हा जगदम्हे हा क्वाजिदे
आकां रक्षरक्ष ॥

दीक्षायागुत्रमल्ल॥



२ अस्मत्पुत्री ३ कृत्तिका दवी सगला वनन पूजाय विना बाहुल कृत्तिका नित्य कर्तुं पुत्री कलमार्क पुत्राय धर्म २३ अर्चनी

ॐ नमः श्री गुरुवाय ॥ गुरुवासी समादाय गत्वा कुरु समीपनी ॥ सूर्यार्घ्यं च ततः कुर्यात् दयवाक्
५० नमः ॥ ३ नमः स्कानं सूर्यार्घ्यं ॥ ३ अथादि ॥ मूलं नन्या संकृत्वा अर्घ्यं पातं संपूज्य ॥ आत्मपू
जा विधाय ॥ ३ ॐ अस्मत्पुत्राय नमः ॥ कानखपुं गृहीत्वा ॥ ३ ॐ नमः ॥ कुरु हर्मिनि नीकयत् ॥ ३ ॐ कि
लि २ विष्णु का कना वायि ॐ अस्मत्पुत्राय नमः ॥ कुरु पादनी ॥ तनम कुलगातनी ॥ पादनी ॥ घाटनी ॥ ल
पनी ॥ सीमार्जनी ॥ ३ ॐ सुहृदयाय नमः ॥ पूजनी ॥ ३ ॐ अकववाय नमः ॥ सवनी ॥ ३ ॐ अस्म
यत् ॥ कुरुनी ॥ ३ ॐ असीमार्जनी ॥ ३ ॐ अलपनी ॥ ३ ॐ अकलामय कुरुय नमः ॥ ३ ॐ अकववा
य नमः ॥ कुरु निगुणी वधनी ॥ ३ ॐ सुहृदयाय नमः ॥ निगुणी पूजनी ॥ ३ ॐ असीमत्पुत्राय नमः
३ नमः ॥ कुरु मधुसूतरीय कृत्वा ॥ ३ सुभ्रूय नमः ॥ अधोराग ॥ ३ ॐ नमः ॥ लखा विपक्षयत्
॥ ३ ॐ अस्मत्पुत्राय नमः ॥ कुरु नवजी कवगधनी ॥ ३ ॐ सुहृदयाय नमः ॥ कुरु नवदुष्पथकवनी

३ नर्पवाग रूकाक्ष अकावादि कृत्वा नर्क

ॐ श्री अकववाय नमः ॥ पूजनी ॥ ३ ॐ सुहृदयाय नमः ॥ बहुर्दिक कुरुगधनी ॥ कुरु मधुसूतरीय
मन्त्रावयत् ॥ ३ ॐ अकावादिस्वरा कुरुकां वन्या नमः ॥ ३ ॐ ककावादि अना कुरुवत्या नमः ॥ ३ ॐ अ
सिताक्षरं ववाय नमः ॥ ३ ॐ वरुणं ववाय नमः ॥ ३ ॐ वरुणं ववाय नमः ॥ ३ ॐ काधरं ववाय नमः ॥ ३ ॐ
उन्मरुणं ववाय नमः ॥ ३ ॐ कयालरं ववाय नमः ॥ ३ ॐ शीषलरं ववाय नमः ॥ ३ ॐ सीलरं ववाय न
मः ॥ ३ ॐ गवगानिस्थानमः ॥ ३ ॐ अस्मत्पुत्राय नमः ॥ लाजा धान्य वीहि घृते वपुः पूजनी ॥ ३
ॐ कुरुगधनी ॥ ३ ॐ कुरुगधनी ॥ नवात्माम कुलपूजयत् ॥ ३ ॐ वरुणीय नमः ॥ ३ ॐ या
गपीय नमः ॥ कुरुत्वनकाष्टं निधाय ॥ ३ ॐ कलामय कुरुय नमः ॥ काष्ठकुरुपूजनी ॥ पुका
त्यवक्रिमादाय ॥ ३ ॐ अस्मत्पुत्राय नमः ॥ ३ ॥ गंधनी ॥ कथादाग्निं संपवित्य ॥ ३ ॐ अस्मत्पुत्राय
॥ पादनी ॥ आत्मानि सूर्यं उकी कृतानलपुत्रं ॥ ३ ॐ वक्रिषे नन्याय नमः ॥ ३ ॐ अधनम

الحمد لله

2

नवाय ४

[illegible]

ऊँ ऊँ वा ला उ नै । अनन वा न रु यं ॥ ऊँ नै अम्मा य रु द् ॥ ह सो पा रु नी ॥ अग्नि प नी तथा म्मा ध्या पा रु नी स्था य
 ॥ अशक्ता ली पु त प्य नी ॥ पूर्व व न्म रु द् ॥ व न्म मयी ध्या त्वा ता व न अशक्ता ल्या मा र्ग नि धाय ॥ रु द् अग्नि
 का व म्मा अ र्ग स्था य ॥ ॥ पू न विष्णु मयी ध्या त्वा दृ त मी ग न ग व न ॥ ऊँ नै अग्नि व म्मा स्था रा ॥ ३ ॥ रु द्
 प न ॥ ऊँ नै विष्णु वि न्द व स्था रा ॥ ऊँ नै रु द् अ य स्था रा ॥ ऊँ नै अ न का य स्था रा ॥ दृ त म्मा रु द् अ द र्ध न अ व द्धा
 त नै ॥ ऊँ नै रु द् अ य न म ॥ पू न व न्म व रु व नी ॥ ऊँ नै अम्मा य रु द् ॥ ॥ ऊँ नै अम्मा य रु द् ॥ क्रि य ॥ ऊँ नै
 ऊँ गी ऋ ऋ स्था रा ॥ उत्स व नै सं स्र व नै ॥ ऊँ नै अम्मा य रु द् ॥ वा न रु यं ३ ॥ न न म रु द् अ सी व य त् ॥ दृ त
 व ला क नै रु द्वा पूर्व व न्म पा रु नी वा ला उ नै ॥ ग वा द क प नी त नि धाय ॥ प वि रु ऋ ख रु ऋ ॥ पा रु
 नी द क्रि त ॥ अश उ रु न रु ऋ रु द् अ स नै गुरु वा र्च नै ॥ ऊँ नै रु व वा य न म ॥ गुरु ॥ ऊँ नै रु द् क्रि का
 ये न म ॥ गुरु वि ॥ ऊँ नै ध न्म रु द् अ य रु द् ॥ ऊँ नै अ व रु द् अ न क नै ॥ ऊँ नै अम्मा उ य य म नै रु

20

ॐ

हीत्वा ॥ आशुक्तालीम (अक्षरं) जीविधवर्ग ॥ उं नै सुदययाय स्वाहा ॥ दक्षिणकर्णरुदाति ॥ उं नै अग्नी
 धामाया स्वाहा ॥ उं ॐ दमग्नी धामाया ॥ उरुवर्ग रुदाति ॥ उं नै उं नै रुगयाय स्वाहा ॥ उं अग्नी धा
 माया स्वाहा ॥ उं ॐ दमग्नी धामाया ॥ पूनर्मध्वकर्ण रुदाति ॥ उं अग्नेयं सुष्टि कृतय स्वाहा ॥ उं
 ॐ दमग्नेयं सुष्टि कृतय ॥ त्याग ॥ ॥ वक्रादिघातनं ॥ उं सै स धा जाताय स्वाहा ॥ उं वै वामद
 वाय स्वाहा ॥ उं वै अद्यानाय स्वाहा ॥ उं येन त्पूषाय स्वाहा ॥ उं कं ॐ ॥ गानाय स्वाहा ॥ ॥ वक्रु ४
 संधानं ॥ उं स धा जात वामदवाया स्वाहा ॥ उं वामदव अद्यानाया स्वाहा ॥ उं अद्याव त्पूषा
 या स्वाहा ॥ उं तत्पूष ॐ ॥ गानाया स्वाहा ॥ ॥ वक्रु मंकी कवर्ग ॥ उं स धा जात वामदव अद्या
 व त्पूष ॐ ॥ गानाय स्वाहा ॥ ति मुक्ति मुक्ति रुदाति ॥ उं नै अम्नाय स्वाहा ॥ उं कं ॐ ॥ गानाय
 स्वाहा ॥ निष्कुर्म ॥ उं नै अम्नाय स्वाहा ॥ उं नै कं क जाग्नेय स्वाहा ॥ नाम कवर्ग ॥ ॥ उं नै सुदययाय

15

10

5

स्वाहा ॥ रुल पासेनं ॥ त नम कुं क तिल रुदाति ॥ अन्न पागनं कृता कवर्ग वरुवन्धनं विवादा व
 रुथय ॥ मातापितृ गोविष्ट ॥ मूल नवोषट् ॥ त नम ॥ ॥ त मासितामादि ॥ उं ॐ ॐ ॐ
 सिताम मरुते व वाय स्वाहा ॥ उं ॐ ॐ ॐ वरुमरुते व वाय स्वाहा ॥ उं उं उं व उमरुते व वाय स्वाहा ॥ उं मं
 मं काधमरुते व वाय स्वाहा ॥ उं ॐ ॐ ॐ उमरुमरुते व वाय स्वाहा ॥ उं नं नं कयाली मरुते व वाय स्वाहा
 ॥ उं उं उं रीषमरुते व वाय स्वाहा ॥ उं ॐ ॐ ॐ मरुते व वाय स्वाहा ॥ ॥ त न ६ पुया गदि ॥ उं
 गी पुया गमरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी वरु गमरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी का
 लाय वी मरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी अरु दस मरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी ऊय
 नी मरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी वरि गमरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी उका म
 कमरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ उं गी दवी काट मरा कं गं स्व व क सदिनाय स्वाहा ॥ ॥ वक्रा ॥

0 cms.

5

10

15

20

25

30

[illegible]

कृगलिकुमव ४

ॐ ह्रीं कृष्णाय स्वाहा ॥ वनू निलया म्मि ॥ ॐ निमकु वलि ॥ ॥ अथ द्वितीय मण्डलक ॥ ॐ ह्रीं कृष्णाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं यमाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नेम्याय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वनू नय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वायव स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कृष्णाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं गानाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विष्णवे स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कृष्णाय स्वाहा ॥ ॐ निवर्ति दत्ता ॥ ॥ यवधन्यादि द्यूत दीय वृत्तिका मन्त्राद्या दिति मन्त्रेण कृत्वा ॥ ॥ गणेशाय नमः ॥ वरुणाय नमः ॥ वरुणाय नमः ॥ पादिना अग्नय नमः ॥ दव कृतस्य मन्त्राद्य कृतस्य ॥ ॥ यिह कृतस्येन आत्म कृतस्येन नमः ॥ यत्राह मना ॥ हन ग्नय स्वादि ॥ पून नृकृति ॥ ॐ स्वस्ति न ॥ ॥ वक्रिणाय नमः ॥ वलि दत्त ॥ वाक्मणाय नमः ॥ दक्षिणाय नमः ॥ सगु वस्त्रपाणि ॥ ॥ स मि त्रिया नमः ॥ पिपीता रिषक ॥ अथा अथा पवित्र मावेन ॥ वक्राण्य पर्वपाद दक्षिण दत्ता ॥ दवा गान्धु मि ति संपूर्ण कृति ॥ आचमन चन्दन गन्धपुष्प मालादि ॥ आसीसा ॥ आगीर्वादि ॥ उक्तिष्व वक्राण्य

कृत्तिका २

निखक्राकृष्णमावेन ॥ कस्तूरी विम्वनि ॥ पुनीत विसर्जन ॥ तनूपाग्ननि पुनर्वर्ष ॥ ग्रायूर्य ॥ ॐ निरुस्मना ॥ तिलक कालय ॥ यरूय रूग कृति ॥ यरू विसर्जन ॥ ॐ निरु ववाग्नि यरू विधि ॥ समाप्त ॥ ॥ ॥

20

15

प्र
प्र

रविभूतसंसार नकायाययात दशवतावादिकायाव संसार लकायादाउव इधर विभूतशकासि॥
 बुभानसृष्टियाययात उद्यमयादाइधर बुभानशकासि॥ मलादवन कालकृत्यसनने अनेकदेत
 स्यादाव संसारदयाकाइधर मलादवनशकासि॥ सृष्ट्या सवरी अधिकतजसदयादाव नथसा
 नाव गननडायाव गनवन थथिदइधर सवरीशकासि॥ पृथ्वीमातान सदाद पृथ्वीकव्यायाइध
 र पृथ्वीमातानशकासि॥ गमवन्दुन वनवासीरुयाव समुद्रयदाव नादसस्यादाव सीतावितरुया
 इधर गमवन्दुनशकासि॥ वन्दुमान थवसस कलायात २ उवकाव क्रि २ क्रिया कलाउपनदयका
 व अमृतलखनरायाव संसार लकायादाइधर वन्दुमानशकासि॥ धर्मा धर्मरु विदयकाया
 इधर बुभानपुनस्वनिम्न वंताया गीरुवानीलकन थयाकाय गीगोवीलकनरु नम्रवाकायनरु
 कासि॥ थदसकदया आखनकुम्बवदमद दनमववाकनयाक आखनकुम्बवदमकद मस्ययाध
 पूव धवनका पुनकाइयाव संरुनिसकासाय खनमदयक कितकिडा कुक्षय थनयापिनिसख॥

मज्झिमनिकाय ४ सुवण्ड
 साकडिके आवा २ वदुनरु॥

10

5

मत्पूजय ३

उं नमः ४ ग म्हा यय २

रुग्णयविमरु वाग्विगुह्यायधीमदि तन्न ४ गिव ४ पुधादयात ॥ गुक्तागिगुक्तागायत्वी गृहात्मस
 र्कृतं जयी । सिद्धि कुरु भनित्यं त्वत्पसादात्त्वयिस्मिन् ॥ सेरु ॥ वद ४ ॥ लिदमूडां दर्शयत ॥ अ
 गुगन्धादि ॥ ४ ॥ निगुगुगुगुनविधि ॥ ॥ नतामं गज्जनी ॥ न्यास ४ ॥ उं हूं स ४ अ न न ग क थ अ मु
 यरुद ॥ कवागंधन ॥ उं हूं स ४ अ न न ग क थ अ मु यरुद ॥ उं हूं स ४ अ न न ग क थ अ मु यरुद ॥ उं
 हूं स ४ अ नादिवाधायो गिखाये वोषद ॥ उं हूं स ४ स्वतनुगत्रलकववाय हूं ॥ उं हूं स ४ पुकागपु
 कलितमं गुगुया यवषद ॥ उं हूं स ४ अ न न ग क थ अ मु यरुद ॥ कवागंधन्यास ४ ॥ नतागु न्या
 स ४ ॥ नतागंधपागपूजा ॥ आत्मसिद्धिनी ॥ तिलकं पूष्य ४ ॥ ध्याने ॥ उं ध्यायदात्मनिदं वं ॥ व
 नुकाठिसमपुर्ण । स्वकमकारुलपुर्ण । स्फुटिकादिसमपुर्ण ॥ कन्दनूगदीननिर्ण हिमादि
 सथायसथुजयाविधुपूर्णाविर्च कीर्णवरीवसतर्ण सतर्णवल ४ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

सथायसथुजयाविधि २

मत्पूजय ३ ययि वलु काला कन सु ४ ॥ २

सद्यो विष्णुः शुक्लाय नमः कदाचिन्मन्त्रविष्णुः ॥ गितवन्त नलिफाङ्गः कथ्यन्धसर्वतथा ह
 नयन्तामताहानं वदन्तामिदं विष्णुः ॥ साममगुलमधुक्क मकवकुं तिलाचनं ॥ एवमप्राय
 विष्णुः वदयन्मासनास्ति ॥ चतुर्भुजं विष्णुलोकं वदन्तययातिनी ॥ यन्मन्त्रनिर्गुण
 ममन्तमिवयुनिर्ग ॥ कलङ्गधामयन्तं हि जगदाध्यायकावकं ॥ यन्मन्त्रनिर्गुणमन्त्रं वामरु
 क्षविचिन्तयन् ॥ तस्यात्सङ्गस्तितादवी ॥ गिर्यैवेविश्वमातरी ॥ विष्णुस्त्वष्टिकयुखी हिमक
 न्दन्तसंपुत्री ॥ वेदुः सङ्गुतीकाशं ॥ मन्त्रीयसदृशपुत्री ॥ मूकारुलनिर्गुणैव ॥ एवमवमु
 वगुणिता ॥ गितवन्त नलिफाङ्गः कथ्यन्धसर्वतथा ह ॥ शुक्लाय नमः कदाचिन्मन्त्रविष्णुः ॥ स्तिताहस
 मनात्रमी ॥ स्वः शुक्लमूकदायता मकवकुं तिलाचनी ॥ वदयन्मासनासीनी ॥ यागयद्वि

वृद्ध ३

गीत १
 हविता ॥ यन्मन्त्रविष्णुः शुक्लाय नमः कदाचिन्मन्त्रविष्णुः ॥ गितवन्त नलिफाङ्गः कथ्यन्धसर्वतथा ह
 ॥ उं ह्रीं सः मन्त्राय नमः ॥ उं ह्रीं सः अमन्त्राय नमः ॥ आत्मनश्चानयन्
 नमः ॥ दामयन्तं ॥ उं ह्रीं सः गलयन्तं नमः ॥ उं ह्रीं सः गुणवन्तं ॥ उं ह्रीं सः दामयन्तं ॥ उं ह्रीं
 सङ्गुली ॥ उं ह्रीं सः सन्तुष्टये नमः ॥ उं ह्रीं सः मन्त्राय नमः ॥ उं ह्रीं सः वास्तुधियन्तं ॥ उं ह्रीं
 २ ॥ उं ह्रीं सः वास्तुधियन्तं विष्णुवन्तं ॥ उं ह्रीं सः नन्दिनं ॥ उं ह्रीं सः मन्त्राय नमः ॥ उं ह्रीं सः
 हनि ॥ उं ह्रीं सः विनायकाय ॥ उं ह्रीं सः वृषाय ॥ उं ह्रीं सः स्कन्दाय ॥ उं ह्रीं सः दधी
 २ ॥ उं ह्रीं सः वज्राय ॥ उं ह्रीं सः आध्यात्मिकाय ॥ उं ह्रीं सः अनन्ताय ॥ उं ह्रीं सः कदा
 य ॥ उं ह्रीं सः नालाय ॥ उं ह्रीं सः यन्त्राय ॥ उं ह्रीं सः यन्त्राय ॥ उं ह्रीं सः कदाय ॥ उं ह्रीं

張

77

ॐ कौं स नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॐ कौं कौं ललितस्वच्छन्दमहादेव वायनमः ॥ आत्मनश्चानपूर्य्य
॥ तत्तादाववर्जने ॥ ॐ कौं गगनयनयनमः ॥ ॐ कौं गुणवर् ॥ ॐ कौं दानविथ ॥ ॐ कौं दहलो ॥ ॐ कौं
सर्वस्वलो ॥ ॐ कौं महालक्ष्मी ॥ ॐ कौं वास्तुधियतथवन्म ॥ ॐ कौं वास्तुधियतथविष्णुव ॥
ॐ कौं नन्दिन ॥ ॐ कौं महाकालाय ॥ ॐ कौं रुद्रि ॥ ॐ कौं विनायकाय ॥ ॐ कौं वृषणाय ॥
ॐ कौं स्कन्दाय ॥ ॐ कौं दधौ ॥ ॐ कौं वज्राय ॥ ॐ कौं आध्वर्यगकथ ॥ ॐ कौं अनन्तासनाय ॥
ॐ कौं कन्दाय ॥ ॐ कौं नालाय ॥ ॐ कौं यन्त्राय ॥ ॐ कौं यन्त्राय ॥ ॐ कौं कर्णनाय ॥ ॐ कौं कर्ण
काय ॥ ॐ कौं धर्माय ॥ ॐ कौं क्लानाय ॥ ॐ कौं वेनाय ॥ ॐ कौं अनेश्वर्याय ॥ ॐ कौं अधर्मा
य ॥ ॐ कौं अक्लानाय ॥ ॐ कौं अवेनाय ॥ ॐ कौं अनेश्वर्याय ॥ ॐ कौं अनेश्वर्याय ॥ ॐ

ॐ कौबलु मलु लाय २ ॥ ॐ कौमृनिमलु लाय २ ॥ ॐ कौमृखलु मलु लाय नमः ॥

ॐ कौयकुर्वदाय २ ॥ ॐ कौसामवदाय २ ॥ ॐ कौमृथर्ववदाय २ ॥ ॐ कौकृतयूगाय २ ॥ ॐ कौकुं नायूगाय
२ ॥ ॐ कौदाययूगाय २ ॥ ॐ कौकलियूगाय २ ॥ ॐ कौसूर्यमलु लाय २ ॥ ॐ कौसीदाय २ ॥ ॐ कौप
मासनाय २ ॥ ॐ कौवृषासनाय २ ॥ ॐ कौसदागिवमनकंव विद्यावृद्धसहामया ॥ विष्वक्दं व
वर्तलं वृक्कावृत्तमवव ॥ स्वर्गुर्वृवावृत्तमवव ॥ मिथ्यायावृत्तमवव ॥ ॐ कौगुवृत्तमवव ॥ ॐ कौगुवृत्तमवव
य २ ॥ ॐ कौवामाये २ ॥ ॐ कौजवाये २ ॥ ॐ कौमोदये २ ॥ ॐ कौकालये २ ॥ ॐ कौकलविक्रमये २ ॥ ॐ कौव
लविक्रमये २ ॥ ॐ कौवलपमथये २ ॥ ॐ कौसर्वरुद्रमथये २ ॥ ॐ कौमनामथये २ ॥ ॐ कौविद्याय
हये २ ॥ ॐ कौगिवासनाय २ ॥ ॐ कौवकायये २ ॥ ॐ कौमादवये २ ॥ ॐ कौकोमाये २ ॥ ॐ कौवेष्टये
२ ॥ ॐ कौवानाये २ ॥ ॐ कौलुनायये २ ॥ ॐ कौवामुनाये २ ॥ ॐ कौमहालये २ ॥ ॐ कौतिथानिनीयुजा

सना २

१२

॥ ॥ पूजनं ॥ ॐ कौजयाये २ ॥ ॐ कौविजयाये २ ॥ ॐ कौमृजिनाये २ ॥ ॐ कौमृयवाजिनाये २ ॥ ॐ कौजकुन्ते
२ ॥ ॐ कौसकुन्ते २ ॥ ॐ कौमादकुन्ते २ ॥ ॐ कौमृकर्वये २ ॥ ॐ कौकौस्वकन्दमहालेववाय २ ॥ ॐ कौमृक
पालीगमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौगिवाहनमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौमन्मथमहालेववाय २ ॥ ॐ कौ
कौकाधवाजमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौविकवाजमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौसामवाजमहालेववा
य २ ॥ ॐ कौकौमयनादमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौविद्यावाजमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौतिहेववा
य २ ॥ ॐ कौकौस्वन्दमहालेववाय २ ॥ ॐ कौकौहं हं ॥ ॐ कौगिवासनाय २ ॥ ॐ कौगिवमृत्तय २ ॥
॥ ॥ पूनद्वानि ॥ ॐ कौयवनयनयादि ॥ मूलमेतु ॥ ॐ कौयजलि ॥ ॐ कौयदयादि ॥ ॐ कौद
दयाय २ ॥ ॐ कौगिवसंस्वरा ॥ ॐ कौगिखायेवोषट् ॥ ॐ कौकववाय २ ॥ ॐ कौमृमृयय २ ॥ ॐ

क ३

नृदिदगला कयात वृजा ॥ यद्वादीगना नैयू ॥ उंकां ॥ नृय २ ॥ उंकां अग्नय २ ॥ उंकां यमाय २ ॥
 उंकां नेमियाय २ ॥ उंकां वृषाय २ ॥ उंकां वायव २ ॥ उंकां कवनाय २ ॥ उंकां ॥ गानाय २ ॥ ॥ न
 गावकुपूजनी ॥ उंकां ॥ गानाय उद्वेकाय २ ॥ उंकां येन त्पूषाय वृषवकाय २ ॥ उंकां वैश्र
 धानाय दक्षिणवकाय २ ॥ उंकां वैवामदवाय उरुवकाय २ ॥ उंकां लेसयाजाताय यमि
 वकाय २ ॥ ॥ नृविकुपूजा ॥ आवाहनादि ॥ नेवयं दगयितु ॥ यागि ॥ सीवना वृडा वतावे
 यममन्त्रिता ॥ आहवायेतुयदं ॥ यतिगृहीत्स्मिर्वर्लि ॥ हंतेकादिअष्टकयालायवर्लि ॥
 क्रूरस्वाहा ॥ उंकां ॥ सर्वयागिनी स्वावर्लि ॥ क्रूरस्वाहा ॥ मण्डलजाय ॥ मयाजाताय विप्रहवा
 मदवाय धीमहि ॥ नन्ना ॥ धाव ॥ यथा दयात् ॥ सर्वलिङ्गमूर्त्तिदगयितु ॥ स्तुति ॥ उं नमः गिवाय ॥

१३

उंकां नृडा २

यायागकिधनाकविश्वमखिलविश्वनियदिका ॥ षट्मानस्य षड्भुमवकटिलाषट्चक्रगर्भयमा
 ॥ ॥ नृयानन्दविकाशितकवगिकयाफ ॥ गिवायागिवा ॥ स्तुतनु ॥ गानिनेव वास्तवकविश्वकृवा
 हेनव ॥ वद ॥ अग्नय ॥ नृनितनुदवाञ्चनविधि ॥ ॥ नगाद्यादगमूर्त्तिगिवपूजा ॥ या
 सादियवृवत् ॥ उंकां ॥ कनाय रुवानी सदिताय २ ॥ उंकां ॥ कृव सवर्गि सदिताय २ ॥ उंकां मेद
 नाय अश्विका सदिताय २ ॥ उंकां मदादवाय मातनी सदिताय २ ॥ उंकां स्कागवमृजानी सदिताय
 २ ॥ उंकां गिवाय गोत्री सदिताय २ ॥ उंकां यगुपतय पावनी सदिताय २ ॥ उंकां उग्रयमन्मनी स
 दिताय २ ॥ उंकां सवयिमाया सदिताय २ ॥ उंकां शुम्भकाय ऊष्ठा सदिताय २ ॥ उंकां ॥ गीश्वनायका
 की सदिताय २ ॥ उंकां वृडाय उमा सदिताय २ ॥ उंकां ॥ कनाय द्यादगमूर्त्तिरुवानी द्यादगमक
 यमदादवाय पावनी यतय वृषध्याय सगलय विवा नाय नमः ॥ हृदयादि ॥ नेवयं ॥ जाय ॥

ना ४

ॐ ॥ वा पा रा हं वा य क म्मा हिं वा वा त्मा वा य स र व षा णा हि मां दं व दं वं गं सर्व पा य रु वा
 ह व ॥ अ न्य ष ण व र्ण ना सि त्व मं व ष ण व र्ण म म । त स्मा त्का व र्ण रा व न व रु त्वं य व मं व व
 ॥ व द ४ ॥ उं नि वा ना मा सी ति ॥ अ ण ग म्मा दि ॥ ॐ ति द्वा द श मूर्ति नि व पू जा ॥ ॥ त मा मा
 ला पू ज नं ॥ न्या स ४ ॥ प र्व व द्वा दि ४ ॥ उं लू ग ल य रु य २ ॥ उं गं मूं उ मा म दं व वा य
 २ ॥ उं लूं व द्का य २ ॥ उं कूं कूं लूं स व स्तु २ ॥ उं कूं स ४ म रु द्वा इ न्न रु ग व स्तु च लु का १४
 त्या य २ ॥ उं कूं कूं इ न्न इ न्न व रु ती उ गु व रु ती २ ॥ उं सूं शि रु म् व रु ती न म ४ ॥
 द द या दि ॥ आ वा रु ना दि ॥ जा य स्तु १ ॥ सर्व म द्म ल मा द्म ल्य १ ॥ नि व स व्वा थि सा ध
 कं । ग व ष ण म्मा कं (ने विं) ना वा य नि न मा म्मु न ॥ व द ४ ॥ उं १ ॥ अ म्म अ म्मि क ति ॥
 न व र्ण २

[illegible]

धूपदीप

नमः पवित्रगन्धधनी ॥ जितस्वना वयस्मानं दासिषु नमः शिवाय च २
मंत्र पूजयेत् तनुना ध्यानं मानुषा

मदादीन पूजयेत् ॥ नमो ह्यसमावृत्य ॥ दवतिला इति पूजयेत् ॥ यथा कर्मणि ॥ आमनु
न विधिं कावयेत् ॥ सर्वपूर्ववद्विधानं न दाना न च न दिय कि कर्मणि ॥ १ ॥ विगेष आमनुन वा
॥ आमनुनि गामि दवगं सल लक्ष्मि गल्ले नैः ॥ मनुष्ये ला कपाले च सहितं यत्रिवाव के ४
॥ निव दया म्यदं दुर्गं यदवदिय विरुक् ॥ नियमश्च कविश्यामि यत्र न वा कूया ॥ सर्वका
नलकाधियाय सर्वतत्वाधियाय आमनुन य विरुक् नमः ॥ ददयादियुजा ॥ नैव ददग १७
नं ॥ जायस्कारं वद ॥ अग्न्यादि ॥ सर्वेषां मा मनुर्न कुर्यात् ॥ ॥ अथ अदुवा सने दग
यित्वा ॥ दप्यले निधाय सुवर्ण धान्य पायस धूप दीप ॥ ॥ नमः ॥ शिव वीजनय
जयेत् ॥ आत्मानं मूलमनु ध्यात्वा ॥ दवस्था गुदगंथत् ॥ इति आमनुन विधिः ॥ ॥ न

यस्तु सिरासनं क्लृप्त्वा ३

कीकनने २

पवित्रगन्धधनी जितस्वना ॥ १

नागशिवताव मावृत्य ॥ यथा आमनुन विधिं नार्गमावताव कर्मकावयेत् ॥ दानादिय
कि कर्मणा पूजयेत् ॥ ॥ विगेषग शिवताव वा ४ ॥ कालात्मना त्वया दव यद्वर्मा
निक विधौ ॥ कर्तुं क्लृप्तं समस्तं कर्तुं युक्तं वमत्कर्तुं ॥ तदमुक्लिष्ट मक्लिष्टं कर्तुं पूष्ट
ममत्कर्तुं ॥ सर्वात्मना मना गमा य विरुं न त्वदि कूया ॥ पूत्रय २ मखवत नियमश्च वाय
सर्वकालनया इकाय सर्वतत्वाधियाय ॥ शिवतत्वाय शिवतत्वाय वस्तु काव न पाद
काय शिवाय प्रथमय विरुक् नमः ॥ विशातत्वाय विशातत्वाय विष्णु काव न पाद
काय शिवाय द्वितीयय विरुक् नमः ॥ आत्मतत्वाय आत्मतत्वाय ब्रह्म काव न पाद
काय शिवाय तृतीयय विरुक् नमः ॥ उदकवर्तनी ॥ उं अथ श्वेत वा साह कल्प ॥ उं अथ

१ॐ कारं वि नृसंयुक्तां ॥ ॐ अङ्गागतां घट्टकाष्टिय ॥ १० ॥ ३

[illegible]

पञ्चममंत्र

उद्धृतावयत्तु निर्व। नियमं च कविष्णुमि। यत्र भंगो न वाङ्मया ॥ सर्वकावलीया इका यः स
 र्वतत्त्वाविधाय ॥ ॐ ति नियमः ॥ पाठनं कावयत्तु ॥ ॐ ति यविज्ञा भादृष्टविधिः ॥ ॥
 तताश्च वदिनं स्वैयविज्ञा भादृष्टी कावयत्तु ॥ पूर्ववेत्त विक्षानं नद्यादिदवाञ्चनं कावय
 त् ॥ यश्चात्यविज्ञा भादृष्टी यथा तथा स्वयविज्ञा भादृष्टी कावयत्तु ॥ अङ्गगन्धादि ॥ ॥ ॥
 ततश्च अञ्चनं ॥ गन्धमया लिफरुहा गन्धयद्वापी ॥ ॐ च्चवावृत्त ॥ अञ्चयदि गिरा गन्धय यथा
 चर्तुत इत्यतः ॥ पीतचूर्णं विलिख्यतः ॥ चन्ददिधूपदीपा नमञ्चनं ॥ न्यासं कृत्वा ॥
 ॐ वलुरुदयाय नमः ॥ ॐ वलुगिरासं स्वाहा ॥ ॐ वलुगिरायै वोषट् ॥ ॐ वलुकवचाय नमः
 ॥ ॐ वलुनारायणाय नमः ॥ ॐ वलु अम्भार्युह ॥ तन्नामयत्तु पूजा ॥ श्रीरामसिंघनं ॥ श्रीरामं ॥ नमः

मा ३

जाल्मधुहर्वचलं कज्जलारुहयानकं । शूलटङ्कधर्वमोडं वडुर्वकुं वडुडुजं ॥ मखादिर्लमदा
 कालं वकदादगलाचनं । जगमकूटखलुनु मलुगंरुगिककलं ॥ शालयक्षायवीरक्ष
 साकसुणकमलुलं ॥ श्वतपप्रासनासीनं हकियद्वार्तिनागनं ॥ मलुलं वडुखलुलं रु
 काका नथवाव्रियत् ॥ आत्मनं ध्यानपूर्व्यं २ ॥ उं वडुसनाय २ ॥ उं वडुमूर्त्तय २ ॥ उं धनिव
 लुश्वनाय हुं रुट् ॥ स्वाहा ॥ ल्यनन आवाक्ष ॥ ॥ पूनद्यनि ॥ हृदयादिपूजा ॥ आवाहना
 दि ॥ जयस्तु ॥ वंद ॥ अग्न्यादि ॥ नम आमनुदी ॥ आवाहनादि ॥ नम ४ पवित्राभा
 दी ॥ अग्न्यादि ॥ ॥ नम ४ गिवनिम्मात्यवाक्षं ॥ उं अया ॥ श्वतवाताह ॥ उं अयादि ॥
 गमरुहि नव्यवकुलि मलिहमादिहृषणं । विहाय रगवनिम्मात्यं व ॥ लुगयनिव दय
 निर्वनिवकनं गनं ॥ उं नमस्तु नूडमं । ३

॥ मनुमिति ॥ उं धनिव (उ) श्वमायकूं रुट्खादनिमकुं गतइकूं ॥ पून ४ ॥ लं रु था कान्नयाना
दि. ताम्बूलं मुन्विलं पनं । निम्बाल्यं रुं जनें रुत्यं. पुदकं रुग्निवाकूया ॥ सर्वभक्तनुक्रियाका
उं मया वलुतवाकूया । न्यूनादिकं कर्तं भादात्. यविपूर्कं सदा मुभ ॥ ॐ नि विज्ञायय
व (उ) दत्वा र्घं तस्य सर्वमात् । सीहं न्मूर्तिमकुं गे. गने ४ सीहा वमूदया ॥ उं वलु मूर्त्य
नम ४ ॥ पून कान्ति मूलं न मनुगं न्मगिथा जयत् । निम्बाल्यादाययत् स्कारं. लि
थ (द्र) मयवाविण ॥ पाश्चात्तुवाविण स्कारं. विसृष्टा र्घकलादिकं । पुका ल्यसं म्य
गवम्य. न्यासं कृथादिथदिनं ॥ ॐ निव (उ) य् जाविधि ४ ॥ ॥ ७ वं नं रु श्व (उ) स्य पू
जा ॥ ॥ ७ वं दमनाभाहर्ण पूर्ववत् ॥ द्वावादिपाकि कभग सं पूष्ट ॥ दामश्चकान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णु. नीक. भाय ॥



बहुवायथथे

76

गङ्गाशक्तिस्तोत्रम्

रं जय त्रुमलु लाघिय नय या इ कां यू ज या मि ॥ शुभ्र लि ॥ ३ ॥ जं जं हा रा य त्रि द्वा त्र या त्र ख ४ या इ कां यू ॥ ३ ॥ जं
जं कम मलु लाघिय नय या यू ॥ ३ ॥ जं जं कू डि क न्ध रा य कू डि का ग कि स हि ना य या यू ॥ ३ ॥ जं जं य दृ द शो या यू
॥ ३ ॥ जं जं न वा त्म य दृ द शो या यू ॥ जं जं न वा त्म का ग य या यू ॥ गं ग न य न य या यू ॥ वं वं क्ता ल्ये या यू ॥ मं मा द न्ध
य या यू ॥ कं को मा शो या यू ॥ वं वं वू शो या यू ॥ वां वा त्रा शो या यू ॥ वं वं न्दा ल्ये या यू ॥ वं वं म ल्त्र ये या यू ॥ मां म दाल
शो या यू ॥ वं वं दू का य या यू ॥ कं कू याला य या यू ॥ जूं जूं दि ना थ गु त्र व या यू ॥ सू शो य या यू ॥ ना रा य ना य या यू
॥ स दानि वा य या यू ॥ मृ लू ज्ज या य या यू ॥ जूं घा त्र श रा य या यू ॥ स वं शो द वं ख ४ या यू ॥ जय ॥ ॐ सि न्ध ना थ य वि
म हं सि हि ना थ य धो म हि ॥ न नाल दू ४ य वा द या न् ॥ १० ॥ स्मृ ॥ वि न्दु न य ली ॥

१७३७

२८ भावि

२ निष्करण

२कालानल

乙亥

222

之

२ मुद्रा

१७७३

५६६

२५६६६

२५१७

गणयन्ति

२३ काष्ठादि

पत्रक

卷之五

२५६

१ मयादि

सुखं सुखं

(कामाना
रागः भगव

जायः काय
विह ॥ ४० ॥

व न्य ॥ अथ
श्री. ॥ ॥

वा.थ.थे॥

This image shows a blank, aged, light brown page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a textured appearance with visible creases and some minor discoloration or foxing. A vertical line is visible on the right side, possibly indicating the binding edge or a fold. There is no text or other markings on the page.

This image shows a blank, aged, light brown page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a textured appearance with visible creases, wrinkles, and some minor discoloration or foxing, characteristic of old paper. There is no text or other markings on the page.

10

100

